प्रातः क्लास 15-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा की याद करो।

ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। हे तो यह दोनो बाप। एक को रूहानी दूसरे को जिस्मानी बाप कहेंगे। शरीर तो दोनो का एक ही है। तो जैसे कि दोनो बाप समझाते हैं। भल एक समझाते हैं दूसरा समझते हैं फिर भी कहेंगे दोनो समझाते हैं। यह जो इतनी छोटी सी आत्मा है उन पर कितना मैल चढ़ा हुआ है। मैल चढ़ने से कितना घाटा पड़ जाता है। यह फायदा और घाटा तब देखने में आता है जब कि शरीर के साथ है। तुम जानते हो जब हम आत्मा पवित्र बनेंगी तब इन(ल0ना0) जैसा पवित्र शरीर मिलेगा। अभी आत्मा में कितना मैल चढ़ा हुआ है। जब मधु निकालते हैं तो उनको छानने से कितने मैल निकलते हैं। फिर मधु शुध अलग हो जाते हैं। आत्मा भी बहुत मैली हो जाती है। आत्मा को ही कहा जाता है डर्टी ब्रूट। आत्मा ही कंचन थी, बिल्कुल प्युर थी, शरीर भी ऐसा सुन्दर था। इन(ल0ना0) का शरीर देखो कितना सुन्दर है। मनुष्य तो शरीर को ही पूजते हैं ना। आत्मा के तरफ नहीं देखते। आत्मा की तो पहचान भी नहीं है। पहले आत्मा सुन्दर बनती है तब चोला भी सुन्दर मिलता है। तुम भी अभी यह बनने चाहते हो। तो आत्मा कितनी सुन्दर होनी चाहिए। आत्मा को ही तत्वप्रधान कहा जाता है। क्योंकि उनमें फुल किचड़ा भरा हुआ है। एक तो देह-अभिमान का किचड़ा और फिर क्रोध ... का किचड़ा। किचड़ा निकालने लिये छाना जाता है। तुम अच्छी रीत बैठ विचार करेंगे तो फील होगा बहुत किचड़ा भरा हुआ है आत्मा में। और रावण के परवश हैं। अभी बाप की याद में रहने से ही किचड़ा निकलना है। इसमें सी टाईम लगता है। बाप कहते हैं देहअभिमान के कारण विकारों का कितना किचड़ा है। क्रोध का भी किचड़ा कम नहीं है। क्रोधी अन्दर में जैसे जलता रहता है। कोई न कोई बात पर दिल जली हुई रहती है। सिकल भी टाडी जैसे रहती है। अभी तुम समझते हो हमारी आत्मा कितनी मैली हुई है। आत्मा कितनी जली हुई है। अभी पता पड़ता है। यह बातें समझने वाले भी बहुत थोड़े हैं। इसमें तो फर्स्ट क्लास फूल चाहिए ना। अभी तो बहुत ही खामियां हैं। कोई कोई में तो ऐसी खामियां रहती हैं जो उनसे बात करने, देखने को भी दिल नहीं होती। तुमको तो बिल्कुल पवित्र बनना है ना। यह ल0ना0 कितने पवित्र थे। वास्तव में इन्हों को हाथ लगाने का भी हुकुम नहीं है। डर्टीब्रूट जाकर इतने पवित्र देवताओं को जाकर हाथ लगा भी न सके। हाथ लगाने लायक ही नहीं। नालायक हैं। शिव को तो हाथ लगाने की दरकार ही नहीं। वह है ही निराकार। उनको हाथ लग ही नहीं सकता। वह तो मोस्ट प्युर है। भल उनकी प्रतिमा बड़ी रखदी हैक्योंकि इतनी छोटी बिन्दी उनको तो कोई हाथ लगा न सके। आत्मा शरीर में प्रवेश करती है तो शरीर बड़ा होता है। आत्मा तो बड़ी छोटी होती ही नहीं। यह तो है ही किचड़े की दुनिया। आत्मा में कितना किचड़ा है। अभी तो पवित्रबन रहे हो। तो किचड़ वालों से कितना किनाराकश होना पड़ता है। नहीं तो ऐसे किचड़े वाले शिव बाबा को छू भी नहीं सकते। शिव बाबा बहुत सेक्रेट है। बहुत पवित्र है। यहां तो सभी को एक समान बना देते। उनको कहा ही जाता है जानवरों की दुनिया। एक दो को कहते भी हैं तुम तो जैसे जानवर हो। तुम तो गदहा हो। बकनाहाथी हो। सतयुग में ऐसी बातें होती ही नहीं। अभी तुम फील करते हो हमारी आत्मा में बड़ी मैल चढ़ी हुई है। आत्मा लायक ही नहीं है जो बाप को याद करे। नालायक समझ आया भी उनको एकदम हटा देती है। बाप कितना सेक्रेट है। तुम आत्मायें क्या से क्या बन जाती हैं। अभी बाप बैठ समझाते हैं तुमने मुझे बुलाया ही है आत्मा को शुध बनाने। बहुत किचड़ा भरा हुआ है। चलन देखकर जैसे नफरत आती है। यह किचड़ा तो कब शुध हो न सके। असम्भव है। बगीचा है ना। बगीचे में कोई सभी फर्स्ट क्लास फूल नहीं होते हैं। नम्बरवार होते हैं। बाप है बागवान। आत्मा कितनी पवित्र बनती है। फिर कितनी मैला एकदम कांटा बन जाती हैं। आत्मा में ही देह अभिमान का, काम क्रोध आदि का किचड़ा पड़ता है। क्रोध भी मनुष्य में कितना है। तो बा। तुम पवित्र बन जावेंगे तो फिर कोई का मुंह देखने दिल भी नहीं होगी। ही ने इबीली अपवित्र को देखना ही नहीं। आत्मा पवित्र बन, जब पवित्र नया चोला लेती है तो फिर किचड़ा देखते ही नहीं। किचड़े की दुनिया ही खत्म हो जाती है। बाप समझाते हैं तुम देह-अभिमान में आकर कितना किचड़ा

बन पड़ी है। पतित बन पड़ी है। बच्चे बुलाते भी हैं बाबा हमारे में क्रोध का भूत है। बाबा हम आप के पास आये हैं पवित्र बनने। जानते हैं बाप तो है ही एक पवित्र। ऐसे बाप की कितनी ग्लानी करते हैं। उनको भिखर ठिक्कर में, कुत्ते बिल्ले में सभी में ठोक देते। हाईयेस्ट अथार्टी को कितना डिफेम करते हैं। अपन पर भी बड़ी नफरत आती है, हम क्या थे। फिर क्या से क्या बन जाते हैं। यह बातें तुम बच्चे ही समझते हो। और कोई भी सतसुंग वा युनिवर्सिटी में कहां भी ऐसी एमआबजेक्ट कोई समझा न सके। अभी तुम बच्चे समझते हो हमारी आत्मा में कैसे किचड़ा भरता है। दो कला कम हुई फिर 14 कला कम हुई। किचड़ा पड़ता गया। इसलिये कहा जाता है तमोप्रधान। एक दो को कैसे गालियां देते रहते। कोई लोभ में, कोई मोह में, कोई क्रोध में जल मरते हैं। इसी अवस्था में ही जल जलकर मर जाना है। अभी तुम बच्चों को तो शिव बाबा की याद में ही शरीर छोड़ना है। जो शिव बाबा ऐसा बनाते हैं। इन ल०ना० को ऐसा बाप ने बने बनाया ना। तो अपन पर कितनी खबरदारी रखनी चाहिए। तूफान तो बहुत ही आवेंगे। तूफान यह माया के ही आते हैं। और कोई का तूफान नहीं है। जैसे शास्त्रों में कहानियां लिख दी है हनुमान आदि का। यह सभी गपोड़े हैं। जो कहते हैं भगवान ने शास्त्र बनाई है। भगवान तो सभी वेदो शास्त्रों का सार सुनाते हैं कि यह किचड़ा बनाते हैं। जिससे पढ़ते2 दुर्गति होती है। यह तो आधा कल्प बाद रावण की मत मिलती है। भगवान ने तो सदगति कर दी उनको शास्त्र बनाने की क्या दरकार। व्यास जिसको भगवान कहते हैं उसने शास्त्र आदि बनाई यह तो दुर्गति की है। मनुष्यों ने ही बनाई है ना। अभी बाप कहते हैं हियर नो ईवील ... इन शास्त्रों आदि से तुम ऊंच नहीं बन सकते हो। मैं तो इन सभी से अलग हूं। कोई भी पहचानते नहीं। तुम्हारे भी कोई फूल हैं जो बाप को देखने लायक हैं। बाप जानते हैं कौन2 मेरी सर्विस करते हैं। अर्थात कल्याणकारी बन औरों का भी कल्याण करते हैं। वही दिल पर चढ़ते हैं। कई तो ऐसे भी हैं जिनको सर्विस का पता नहीं है। ऐसे को तो बाप जैसे कि देखते हुये नहीं देखते हैं। डर्टी को क्या देखेंगे। इसलिये अभी बाप कहते हैं किचड़ा निकालते जाओ। ज्ञान तो मिला है अपन को आत्मा समझो। और बाप को याद करो। भल आत्मा शुध बनती जाती है शरीर तो फिर भी डर्टी है ना। जिनकी आत्मा शुध होती जाती है उनकी एक्टिविटी में भी रात-दिन का फर्क पड़ता जाता है। चलन से ही मालूम पड़ जाता है। नाम कोई का नहीं लिया जाता है कि और ही बदतर न बन जाये। अभी तुम फर्क देख सकते हो। तुम क्या थे। फिर क्या बनना है। तो श्रीमत पर चलना चाहिए ना। अन्दर गंद जो भरा हुआ है उनको निकालने का कोशिश है। कोई2 बहुत डर्टी बच्चे होते हैं तो उन से बाप भी तंग हो जाते हैं। कहते हैं ऐसा बच्चा तो न होता तो अच्छा। फूलों की बगीचे की खुशबूएं होती है परन्तु ड्रामा अनुसार किचड़ा भी है। अक को तो बिल्कुल देखने दिल नहीं होती। परन्तु बगीचे में जाने पर नजर तो सभी पर पड़ेगी ना। आत्मा कहेगी यह फलाना फूल है। खुशबूएं भी अच्छे फूलों की लेंगे ना। बाप भी देखते हैं इनकी आत्मा कितनी याद की यात्रा में रहती है। कितना पवित्र बनी है और फिर औरों को भी आप समान बनाते हैं। ज्ञान सुनाते हैं। मूल बात ही है मन्मनाभव। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पवित्र फूल बनेंगे। यह (ल०ना०) कितने पवित्र फूल हैं। इन से भी शिव बाबा बहुत सेक्रेट है। मनुष्यों को थोड़ेही पता है इन ल०ना० को भी शिव बाबा ने ऐसा बनाया है। तुम जानते हो शिव बाबा ने इन्हों को ऐसा बनाया है। इस पुरुषार्थ से यह बने हैं। राम ने कम पुरुषार्थ किया है तो चन्द्रवंशी बने। बाप समझाते तो बहुत ही हैं। एक तो याद की यात्रा में रहना है। जिससे गंद निकले। पवित्र बन जावेंगे फिर तो तुम्हारी दिल नहीं होगी गंदे से मिलने। परन्तु सर्विसअर्थ तुमको बात-चित करनी पड़ती है। कोई तो बड़े गंदे डर्टी ब्रूटस होते हैं। कोई बुत अच्छी शीत बैठ सुनते हैं। आरग्यु भी नहीं करते। कहेंगे आप बिल्कुल ठीक समझाते हो। म्युजियम में आते तो बहुत हैं ना। बच्चों को सर्विस का बहुत शौक रखना है। सर्विस को छोड़ कब नींद नहीं करनी है। सर्विस पर बड़ा एक्यूरेट रहना चाहिए। म्युजियम में भी तुम रेस्ट का टाईम छोड़ते हो, गला थक जाता है। भोजन आदि भी पाना है। परन्तु अन्दर में दिन-रात उछल आनी चाहिए कोई –

आये तो उनको रास्ता बतावें। भोजन के टाईम को ई आ जाते हैं, तो पहले उनको अटेन्ड कर फिर भोजन खाना चाहिए। परन्तु ऐसी सर्विस वाला एक भी है नहीं। जो हेड्स होकर रहती हैं, वहां देह-अभिमान आ जाता है। आरामपसन्द बन जाते हैं। चाय भी कोई खाटिया पर देवे। कपड़ा भी उनको कोई पहनावे। ऐसे नवाबी बन जाती हैं। बाप को समझानी भी देनी पड़े ना। यह नवाबी छोड़ो। फिर बाप साथ भी करावेंगे अपना पद देखो। देह-अभिमान का कुल्हाड़ा आपे ही अपने पांव पर लगाया है। बहुत बच्चे बाबा से भी रीस करते हैं। अरे यह तो शिव बाबा का रथ है, इनकी सम्भाल करनी पड़ती है। रथ को तन्दुरुस्त रखना पड़ता है। नहीं तो यह तबला कब खराब हो पड़ता है। इनसे थोड़ेही रीस करनी है। बाबा यह करते हैं, यह खाते हैं हम क्यों न करें। यह किसका रथ है यह भी समझने की बुद्धि नहीं है। इनको तो बड़ा खबरदारी रखनी पड़ता है। कुछ नीचे-ऊपर बेकायदे चीज खा लेते हैं तो झट तबला खराब, खांसी आदि हो जाती है। यहां तो ऐसे हैं ढेर दवाईयां लेते रहते। दस डॉक्टरों की दवाईयां करते रहते हैं। भल बाबा कहते हैं शरीर को तन्दुरुस्त रखना है परन्तु अपनी अवस्था को भी तो देखनी है ना। तुम बाबा की याद में रह कर खाओ तो कब कोई चीज नुकसान नहीं करेगी। याद से ही ताकत भर जावेगी। भोजन बड़ा शुद्ध हो जावेगा। परन्तु वह अवस्था है नहीं। बाबा तो कहते हैं ब्राह्मणों का बनाया हुआ भोजन तो उत्तम ते उत्तम है। परन्तु वह तब जब कि याद में रह बनावे। यादगीर रह बनाने से उनको भी फायदा और खाने वाले का भी फायदा होगा। अक्ल भी तो बहुत है ना। वह विचारे क्या पद पावेंगे। बाबा को तो रहम पड़ता है। सर मंडल के साज से देहअभिमानी सांडे क्या समझें। सांडे फेल हो जाते हैं। दास-दासियां बनने से फिर भी अच्छे साहुकार बनना अच्छा है। दास-दासियां रख सकेंगे। परन्तु ड्रामा में दास-दासियां बनने की भी नूंध है। इसमें खुश न होना चाहिए। विचार भी नहीं करते हैं हम को ऐसा बनना है। वही आसुरी चलन, आसुरी खान-पान चला ही आता है। बाप तो कहते हैं निरन्तर मुझ एक को याद करो। सिर सिर सुख पाओ ... भक्तों ने फिर सुमिरण माला बैठ बनाई है। वह भक्तों का काम है। बाप तो सिर्फ कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बस। बाकी कोई जाप न करो। न माला फेरो। बाप को जाना है अब उनको याद करना है। मुख से बाबा बाबा भी कहना थोड़ेही है। तुम जानते हो वह हम आत्माओं का बेहद का बाप है उनको याद करने से हम सतोप्रधान बन जावेंगे। अर्थात आत्मा कंचन बन जावेगी। कितना सहज है परन्तु युद्ध का मैदान है ना। तुम्हारी है ही माया से लड़ाई। वह पद2 तुम्हारी बुद्धि का योग तोड़ती है। जितना2 विनाशकाले प्रीत बुद्धि है इतना पद भी होता है। सिवाय एक के और कोई याद भी न आये। कल्प पहले भी ऐसे निकले हैं जो विजय माला के दाने बने हैं। तुम जो ब्राह्मणकुलके हो ब्राह्मणों की ही रुद्र माला बनती हैं। जिन्होंने बहुत गुप्त मेहनत की है ज्ञान गुप्त है ना। बाप तो हरेक की अच्छी रीत जानते हैं। अच्छे2 नम्बर वाले जिनको महारथी समझते थे वह आज है नहीं। अभी तो माला के आठ दाने भी मुश्किल बना सकेंगे। देह-अभिमान बहुत है। बाप को याद रह नहीं सकती है। माया बड़ी जोर से थप्पड़ मारती है। बहुत थोड़े हैं जिनको माला बन सकेंगी। तो बाप फिर भी बच्चों को समझाते हैं अपने को देखते रहो हम कितने पवित्र देवतायें थे फिर हम कैसे से कैसे बन गये हैं। किचड़ा बन गये हैं। अभी शिव बाबा मिला है, तो उनकी मत पर चलना चाहिए। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। बहुत हैं जो देहधारी को याद करते हैं। कोई की भी याद न आये चित्र भी कोई का न रखना है। एक शिव बाबा की ही याद रहे। शिव बाबा को शरीर है नहीं। यह भी कुछ समय के लिये लोन लेता है। तुमको ऐसा देवी-देवता (ल०ना०) बनाने लिये कितनी मेहनत करते हैं बाप कहते हैं तुम हमको पतित दुनिया में ही बुलाते हो। तुमको पावन बनाता हूं फिर भी तुम तो मुझे पावन दुनिया में तो बुलाते ही नहीं हो। वहां क्या आवर करेंगे। उनको सर्विस ही है पावन बनाने की। बाप जानते हैं विकर्मी जलकर काले कोयले बनगये हैं। कोई विकार में गिरते हैं तो एकदम काला मुंह कर देते हैं। दण्ड भी सहना पड़ जाता है। अच्छा स्वीट बच्चों को याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।